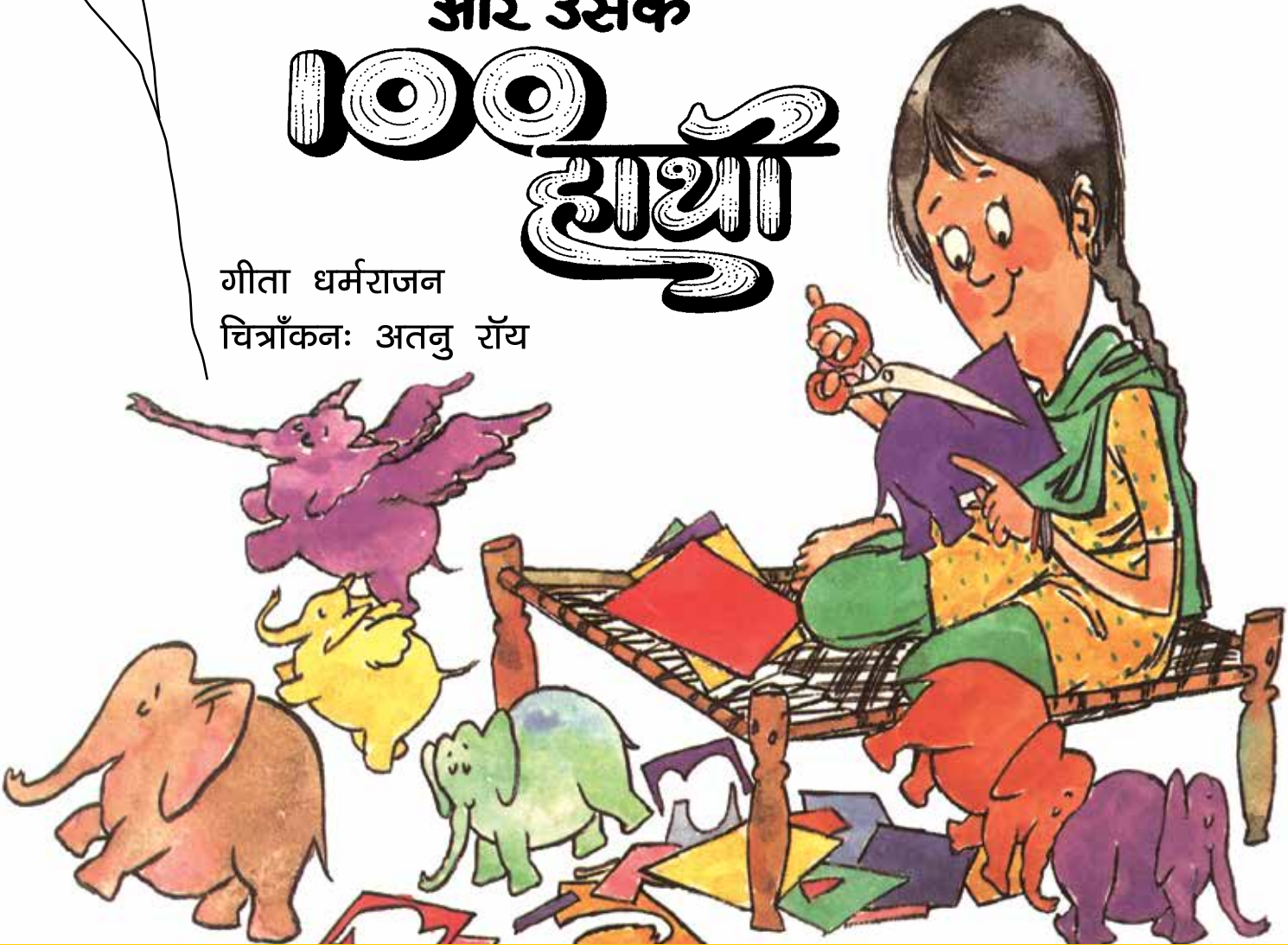


शान्ती और उसके 100 हाथों

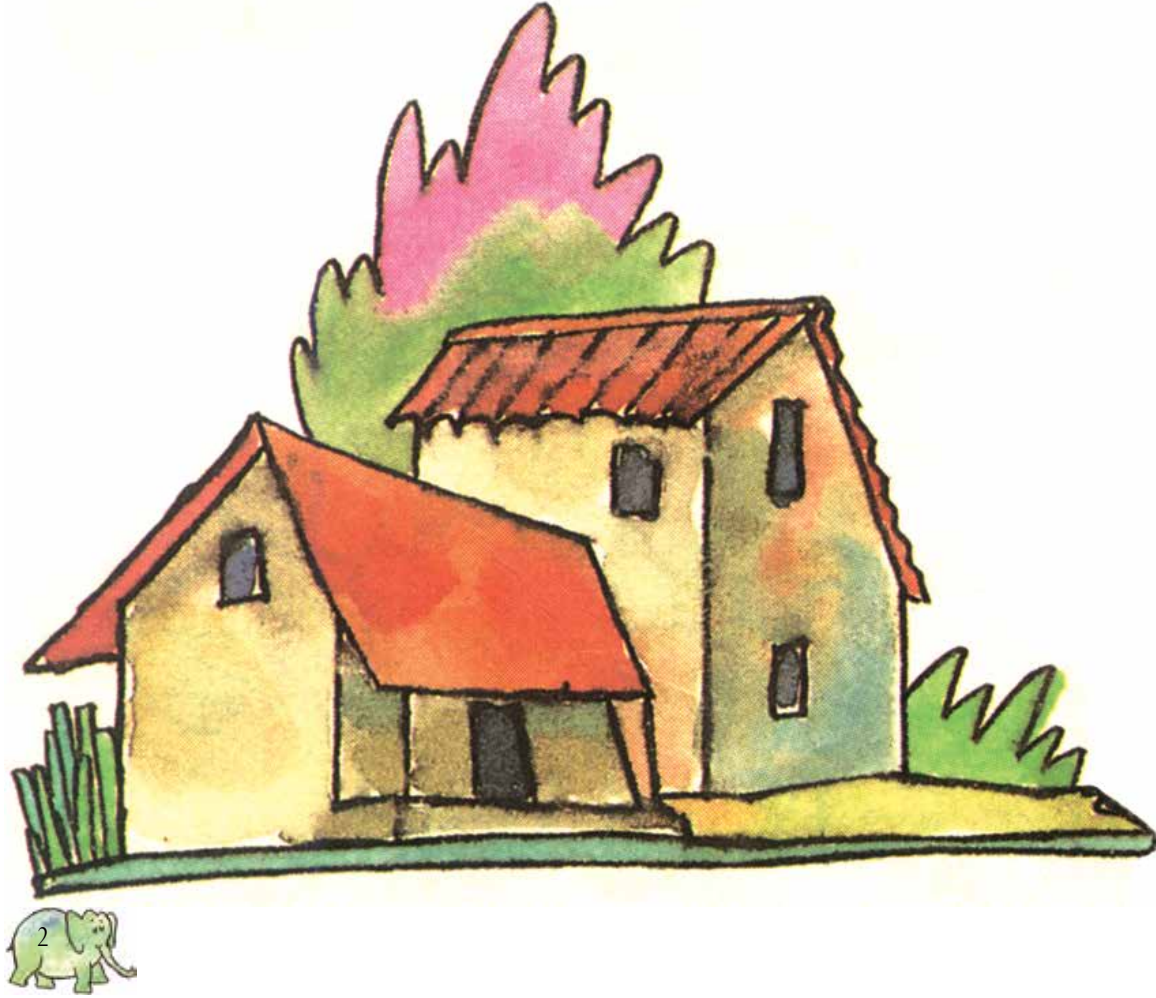
गीता धर्मराजन
चित्रांकन: अतनु रॉय



कथा की 300एम थिंकबुक



“अरे! स्कूल की छत तो फिर से टपकने लगी” चिन्तित स्वर में शन्नो की टीचर ने कहा।

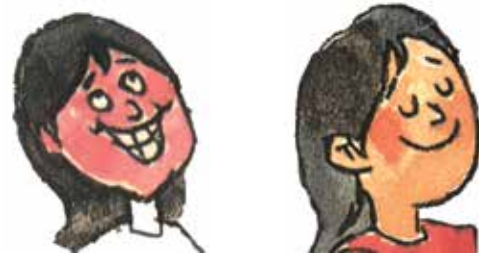


“छत की मरम्मत कराने के लिए हम सबको पैसे इकट्ठे करने होंगे। क्यों न इस बार हम एक मेला लगाएँ?”





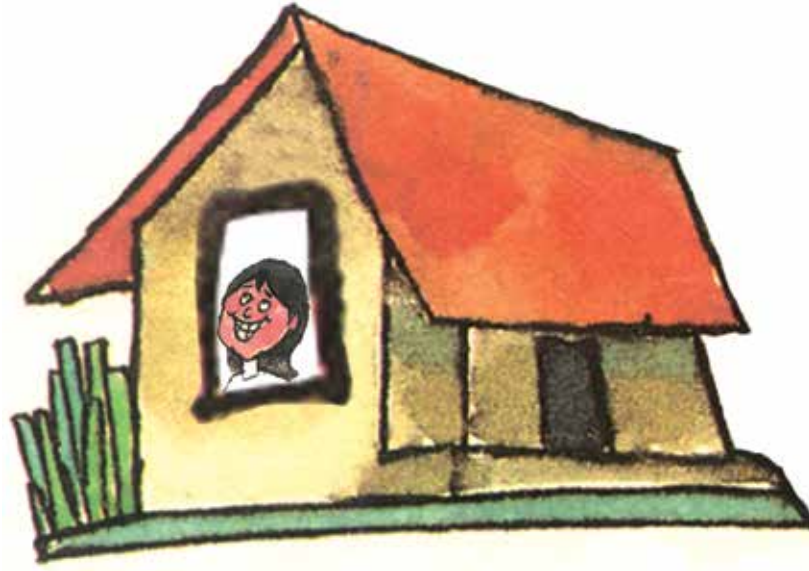
हममें से हर एक कुछ
न कुछ बनाकर लाएगा
और मेले में बेचेगा।



इस तरह मज़ा तो आएगा ही,
साथ ही कुछ पैसे भी इकट्ठे
हो जाएँगे,” शन्नो बोली।

सबको शन्नो की यह
बात अच्छी लगी!

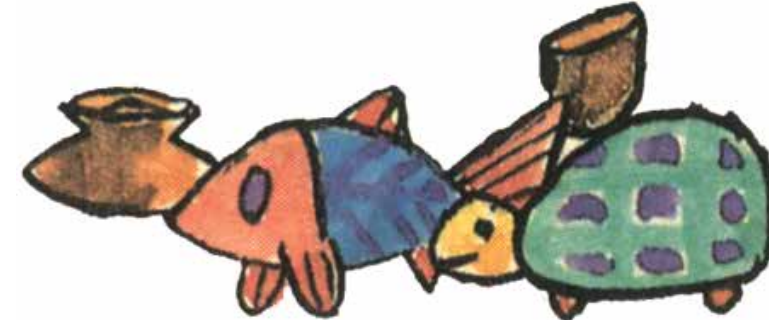




सीता की माँ ने कहा कि
वे मेले के लिए जलेबियाँ
बना देंगी।



अहमद के अब्बा जो कुम्हार
हैं, उन्होंने बहुत सारे मिट्टी
के खिलौने बनाने का
वायदा किया।



और शन्नो ?



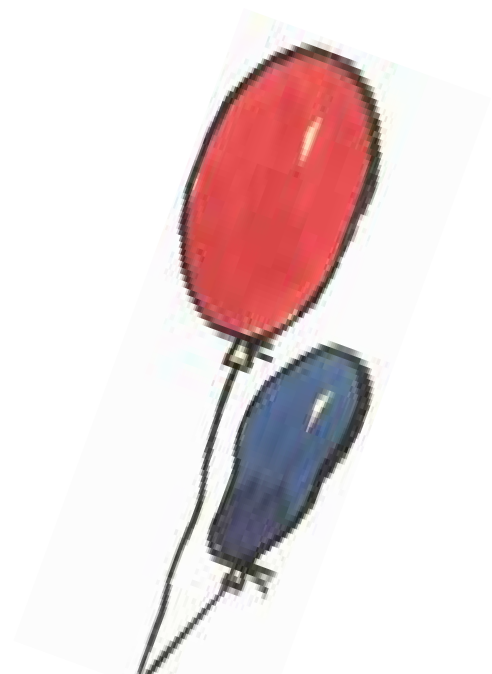
“मेरे पास अभी बिल्कुल समय नहीं है,” शन्नो की माँ ने कहा, “तुम खुद ही कुछ बना लो, बेटी।”



शन्नो चिन्ता में पड़ गई।



वह सोचने लगी कि, वह मेले के लिए क्या बनाकर ले जा सकती है। तभी उसे एक विचार आया!





और ...

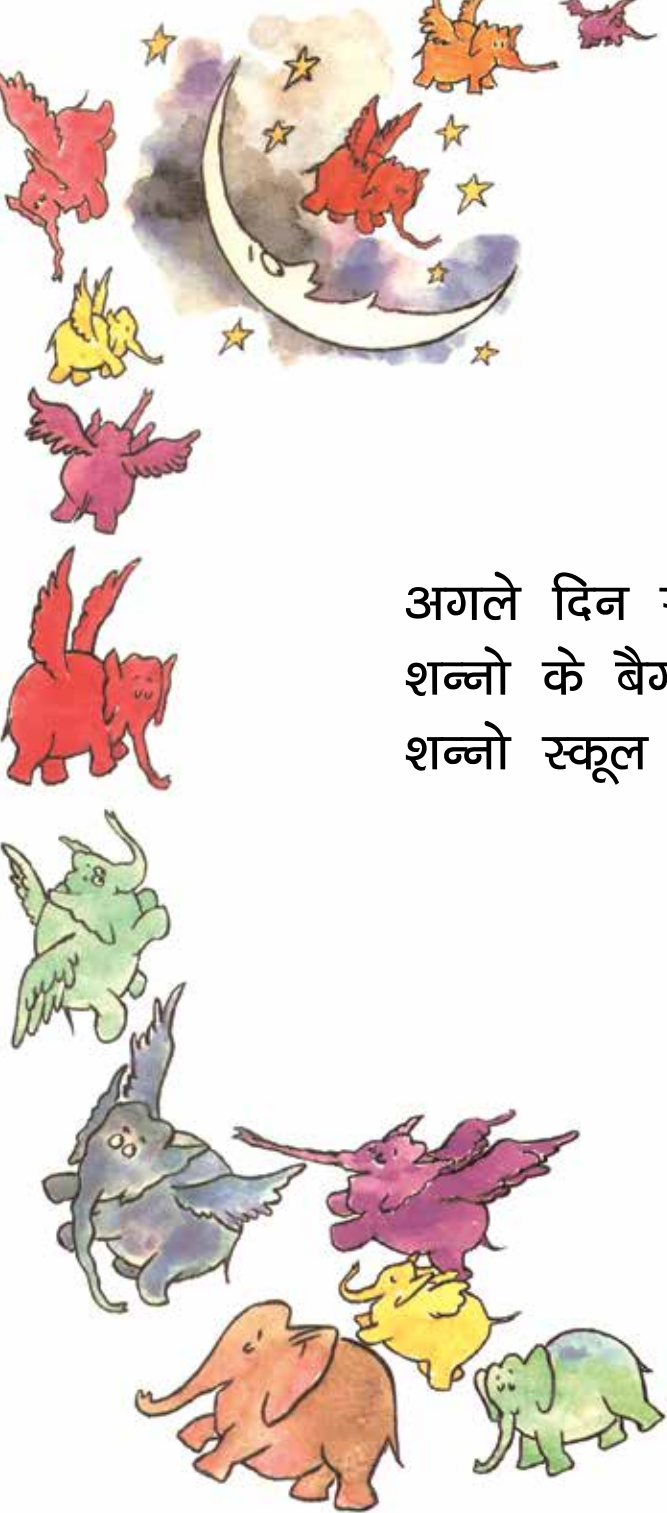
उस रात, नन्हे चाँद ने आकाश से
झाँककर, शन्नो को अपनी चारपाई पर,
कागज़ के टुकड़े काटते देखा।

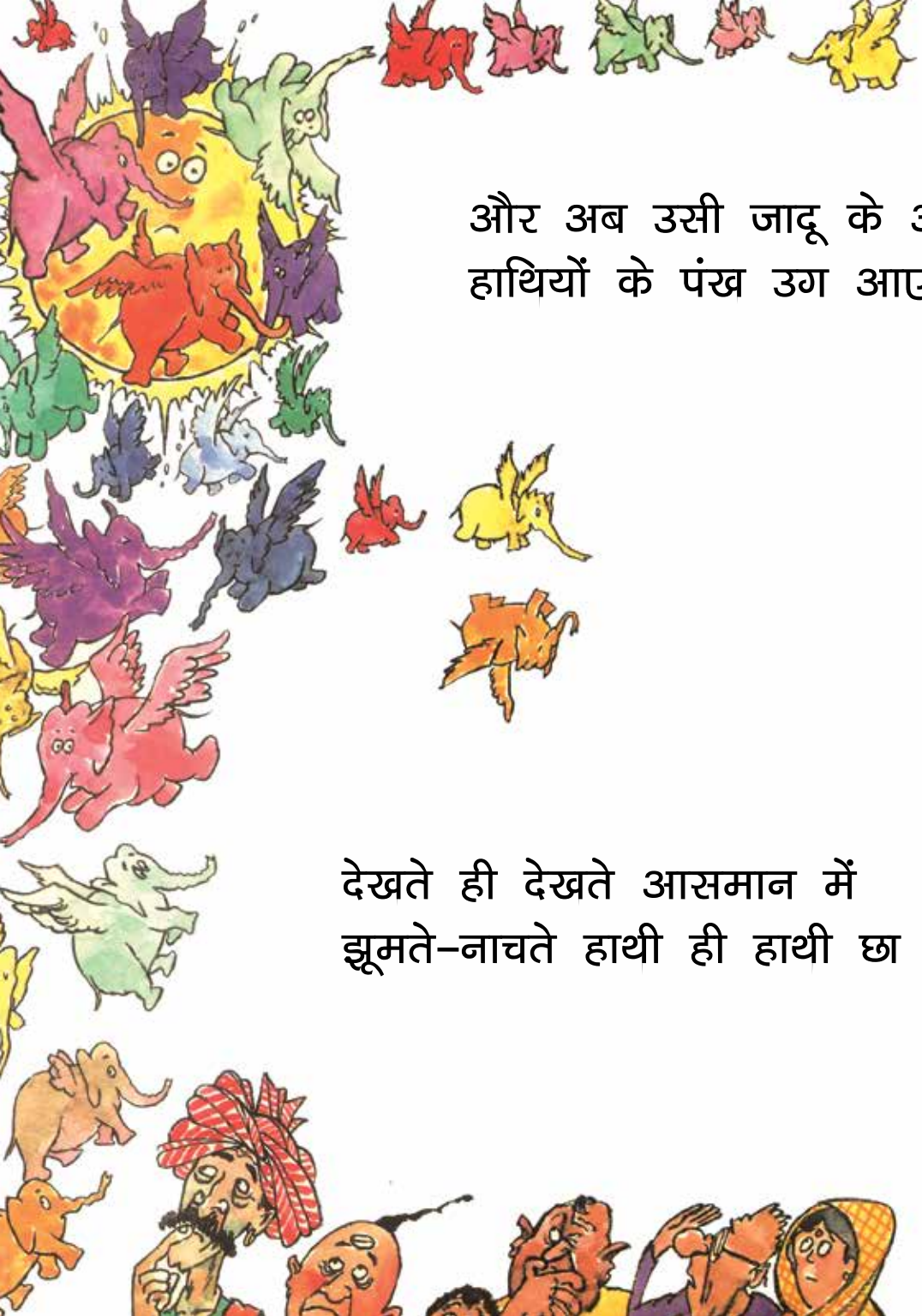


पर मासूम शन्नो को मालूम ही
न था कि रात नन्हे चाँद ने एक
जादुई मंत्र पढ़ा था।

अगले दिन रंगीन कागज़ के सौ हाथी
शन्नो के बैग में थे। कूदती-फाँदती
शन्नो स्कूल की ओर चल दी।

तभी तो शन्नो एक ही रात में
सौ हाथी बना सकी थी!





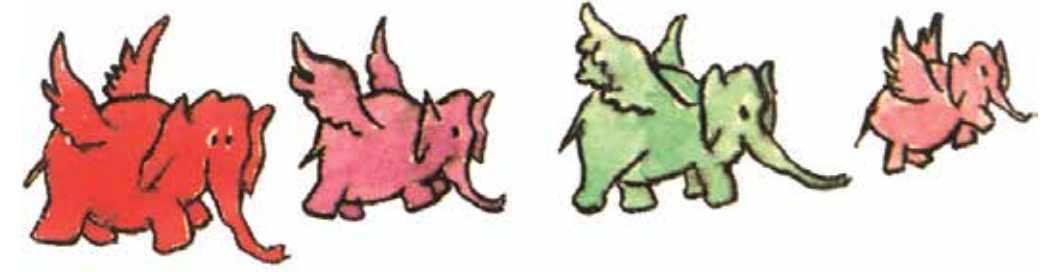
और अब उसी जादू के असर से उन हाथियों के पंख उग आए थे।

देखते ही देखते आसमान में झूमते-नाचते हाथी ही हाथी छा गए।

इतने सारे हाथी आसमान में देखकर नन्ही सीता बोली, “टीचर दीदी बहुत नाराज़ होंगी।”



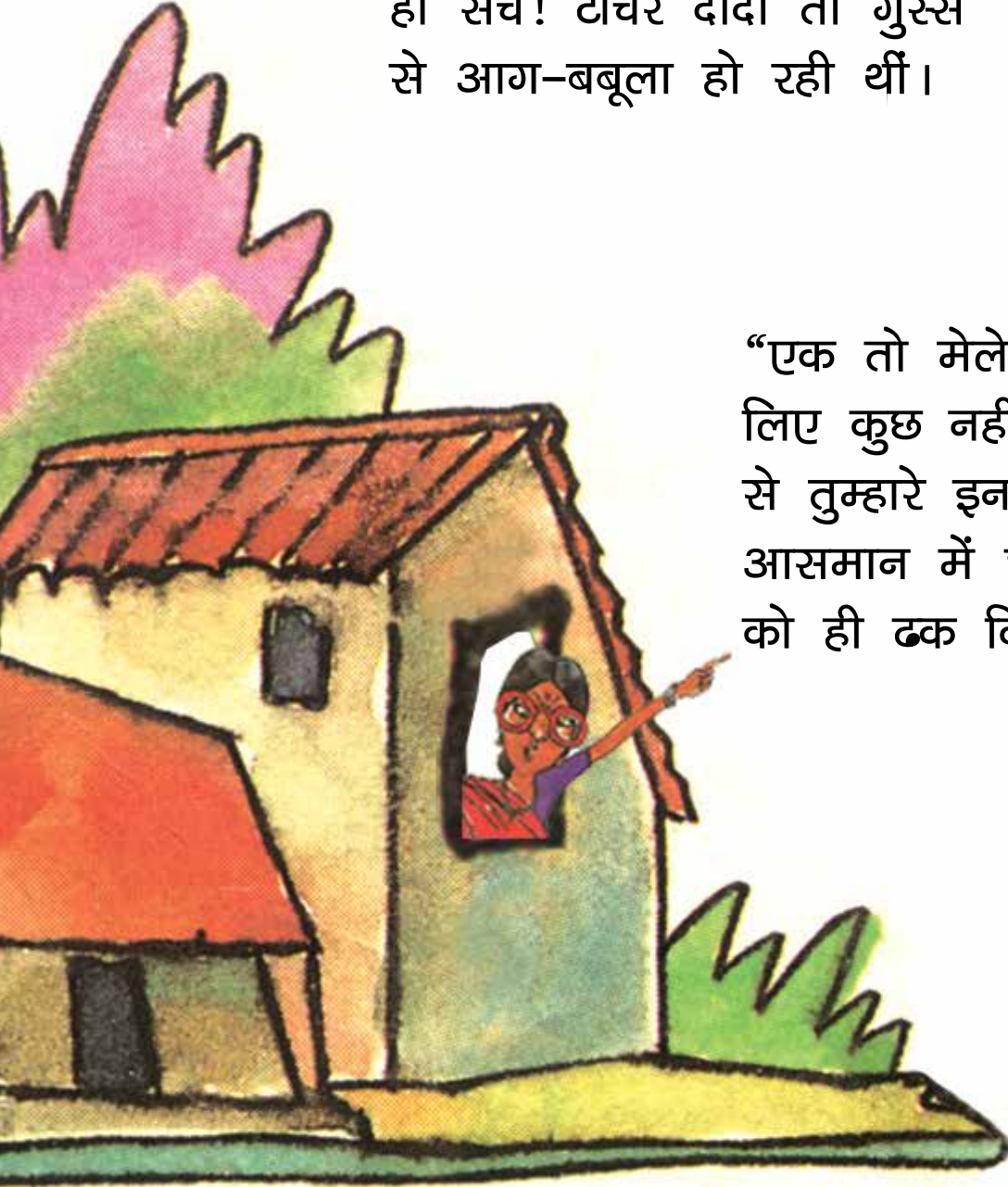
हाँ सच! टीचर दीदी तो गुरसे
से आग-बबूला हो रही थीं।



“एक तो मेले में बेचने के
लिए कुछ नहीं लाई, ऊपर
से तुम्हारे इन हाथियों ने,
आसमान में छकर, सूरज
को ही ढक दिया है!”

अब भला कौन आएगा
हमारे मेले में?”

शन्नो की आँखों से मोटे-मोटे
आँसू टपकने लगे।



अहमद को बहुत
बुरा लगा।



उसने शन्नो का मन बहलाने के
लिए कहा, “वैसे भी कौन आता है
इस छोटे-से गाँव के छोटे-से स्कूल
के छोटे-से मेले में?”

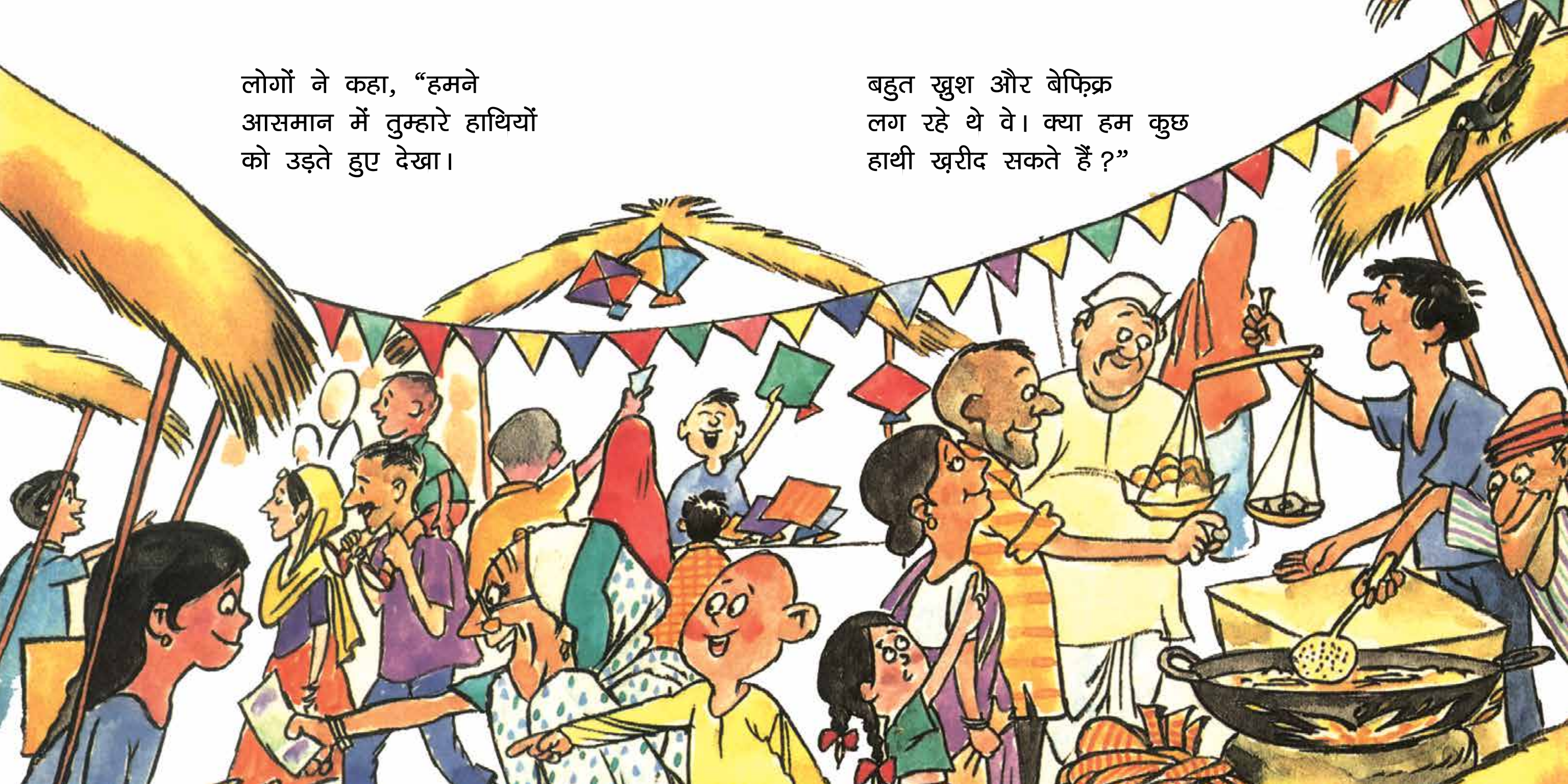


अचानक सीता चिल्लाई,
“देखो! देखो! हमारे गाँव
की ओर कितने सारे लोग
आ रहे हैं!”



लोगों ने कहा, “हमने
आसमान में तुम्हारे हाथियों
को उड़ते हुए देखा।

बहुत खुश और बेफ़िक्र
लग रहे थे वे। क्या हम कुछ
हाथी ख़रीद सकते हैं ?”





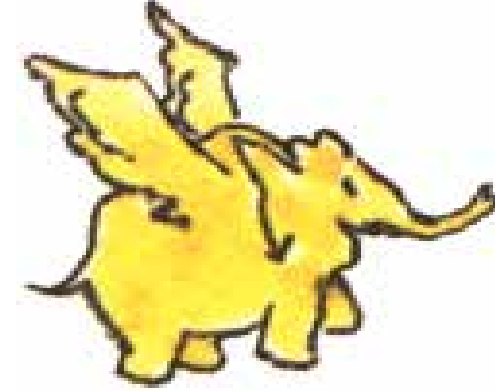
और देखते ही देखते मेले की
सारी चीजें बिक गईं!

“अब हम अपने स्कूल की
नई छत बनवा सकते हैं।”

आप हमें कब तक नई खपरैल
दे सकेंगे?” टीचर दीदी ने शन्नो
की तरफ मुस्काते हुए, अहमद के
अब्बा से पूछा।



और शन्नो के हाथी ?



अरे! कल ही तो मैंने एक हाथी को
आसमान में उड़ते हुए देखा था।
क्यों, तुमने नहीं देखा क्या ?



थोड़ी जानकारी थोड़ा मज़ा!

शन्नो के हल्के फुल्के कागज़ के हाथी तो एक-एक करके आसमान में उड़ गए, पर क्या सच में हाथी उड़ सकते हैं ?

क्या तुम जानते हो ?



हाथी पृथ्वी पर चलनेवाला सबसे बड़ा जानवर है!

एक साधारण हाथी का वजन 3-5 टन तक होता है!



हाथी अपने कान अपने शरीर को ठंडा रखने के लिए हिलाते हैं।



हाथी अपनी सूंड से भारी से भारी लकड़ी के गट्टर या मटर के दाने जैसी छोटी से छोटी चीज़ भी उठा सकते हैं।



चित्र में दिखाए गए 1 से 27 तक के बिंदु रेखा खींचकर मिलाओ और रंग भरो। फिर लिखो इस जानवर के अंगों के नाम।

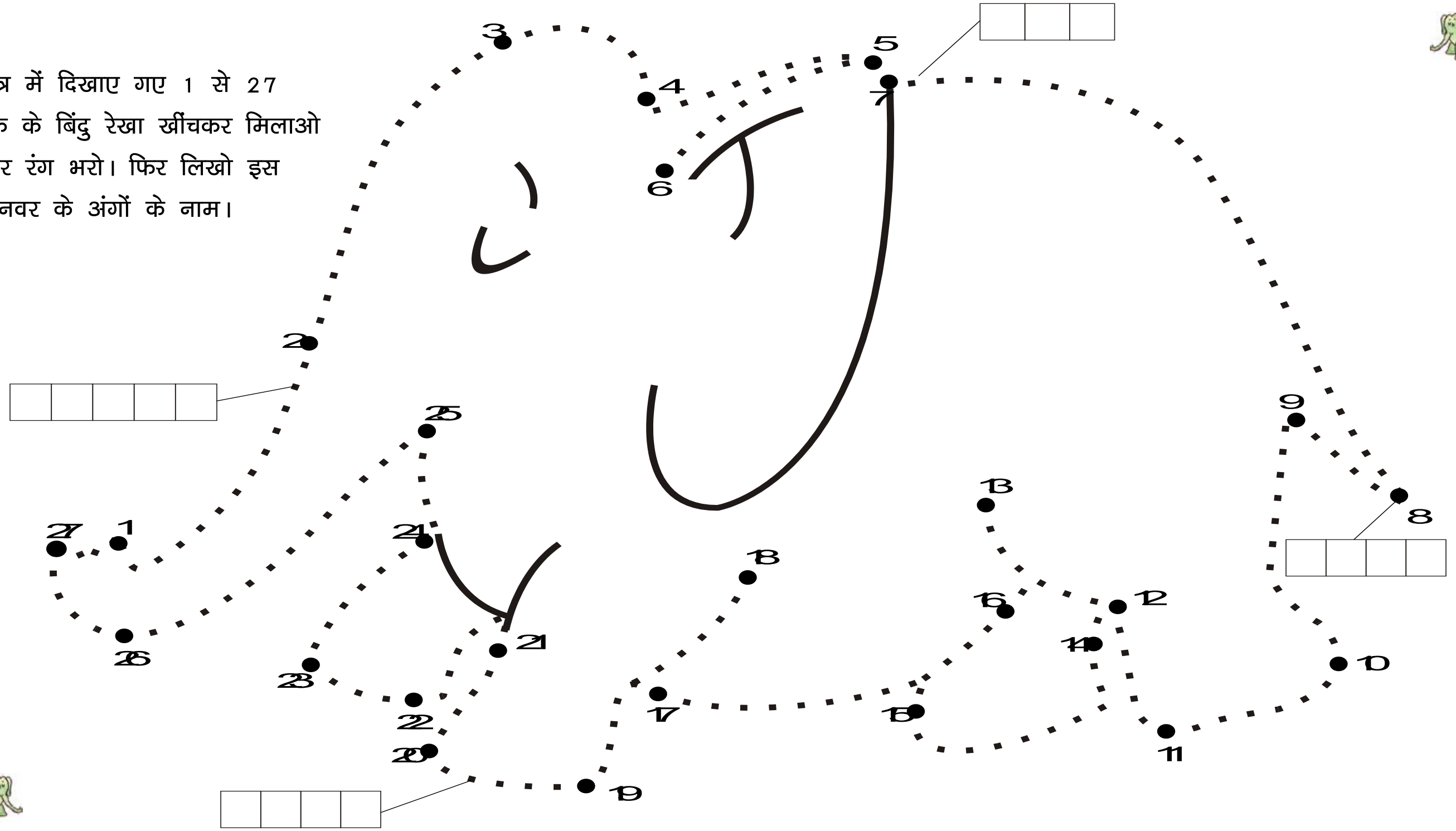


Diagram showing a dotted outline of an elephant's head and trunk, divided into 27 numbered points (1 to 27) for a dot-marker activity. The trunk is on the right, and the head is on the left. There are four empty boxes for labeling: one at the top right, one on the left side, one at the bottom left, and one on the right side near the trunk.

xlrk /leɪkt u बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह टारगेट पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका पेन्सिलवेनिया गजेट की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किये गये इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया है।

vruqjkw ने एक सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रकारी की है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। उत्कृष्ट रंगों से सजी उनकी विस्तृत छवियाँ नन्हे पाठकों के मन को छू लेती हैं। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुडे में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफिकेट ऑफ ऑनक फॉर इलस्ट्रेशन। रॉय का स्टूडियो गुडगाँव में है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर-लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

“भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!”

– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ

“कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।”

– पेपरटाइगर्स

“कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।”

– टाइम आउट

“कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।”

– चार्ल्स लैड्री, द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग



हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1994, 2021

मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © व्यंकटेश माडगुलकर

चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्य: हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए-3 सर्वोदय एन्चलेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017

दूरभाष: 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998

ई-मेल: marketing@katha.org

वेबसाइट: www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।

कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।



यह पुस्तकें कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायीं हैं। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए हैं।

यह हमारे 'UntextBook Initiative' का हिस्सा है। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें। हमसे जुड़ें: 300m@katha.org स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha.org पर हमें लिखें

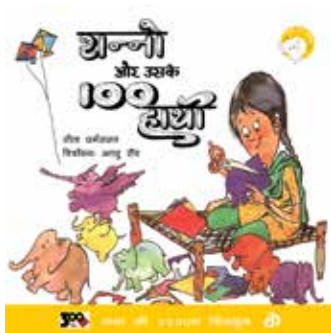
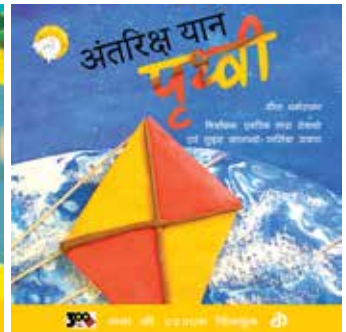
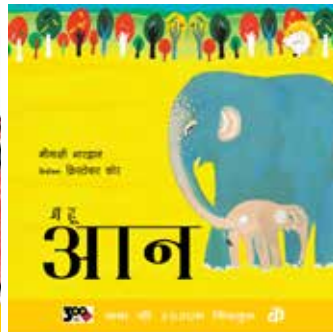
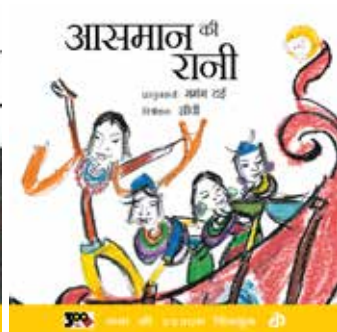
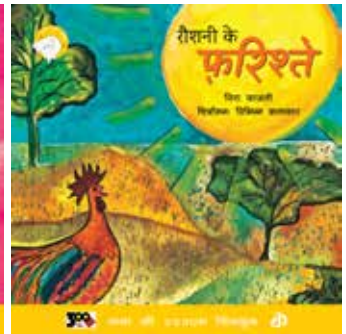
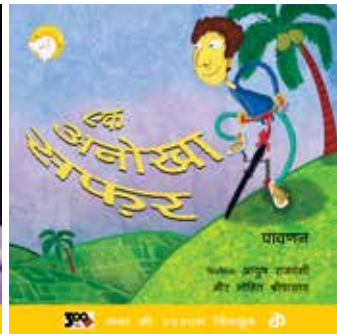
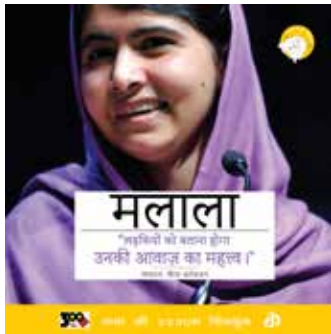
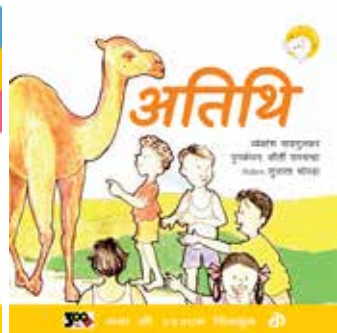
'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है। यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha.org पर जाएँ।

पढ़ने के लिए पढ़ो
समझने के लिए पढ़ो
आनंद और

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं



FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."
— The iconic The Economic Times

k for children
ISBN-978-93-88284-81-3
www.katha.org

9 789388 284813
₹ xxx

इसकी गीन शेखना में